बहुजन हिताय! बहुजन सुखाय!

सक्षम भारत

राष्ट्रीय हिन्दी दैनिक | इन्द्रजीत सिंह, मुख्य संवाददाता/सचिव, CNSI-Delhi

दिल्ली, हरियाणा, पंजाब, राजस्थान, उत्तर प्रदेश से प्रसारित

www.sakshambharat;net, E-mail : saksham.bharat@hotmail.com

Member : CENTRAL NEWSPAPER SOCIETY OF INDIA DELHI

● वर्ष: 24 ● अंक: 195 ● नई दिल्ली ● बुधवार 20 मई 2026 ● प्रभात कालीन ● मूल्य: 3 रूपया ● पृष्ठ: 4

रिपब्लिकन मजदूर संगठन के सदस्य बनें

E-mail : rmsdp@hotmail.com

अनागरिक गीता भारती भवन
बी-2/370, सुल्तानपुरी
दिल्ली-86

दिल्ली के जहांगीरपुरी में दिल दहलाने वाला हादसा, युवक को जिंदा जलाने के आरोप में पत्नी-सास गिरफ्तार

नई दिल्ली। दिल्ली के जहांगीरपुरी से एक दिल दहला देने वाला मामला सामने आ रहा है। यहां एक शख्स जिसे कथित तौर पर उसकी पत्नी और सास ने जिंदा जला दिया था, उसकी मौत हो गई है। वहीं इस मामले में उत्तर-पश्चिमी जिला की पुलिस ने आरोपी मां-बेटी को गिरफ्तार कर लिया है। पुलिस इनसे पूछताछ कर रही है। पुलिस से मिली जानकारी के अनुसार, उन्हें 18 मई को शाम 4.49 से 4.50 के बीच महेंद्रपार्क पुलिस स्टेशन पर एक पीसीआर कॉल मिली। जानकारी मिलते ही एसएचओ पुलिस स्टाफ के साथ मौके पर पहुंचे और दीपांश चौधरी नामक शख्स को झुलसी हुई अवस्था में पाया। फिर तत्काल उसे बीजेआरएम अस्पताल भर्ती कराया गया, जहां इलाज के दौरान उसकी मौत हो गई।

2 साल बेमिसाल-देवेंद्र यादव के प्रदेश अध्यक्ष पद के दो वर्ष पूर्ण होने पर सम्मान समारोह आयोजित

नई दिल्ली।(आकाश शक्य) दिल्ली प्रदेश कांग्रेस कमेटी के अध्यक्ष भाई देवेंद्र यादव के प्रदेश अध्यक्ष के रूप में सफलतापूर्वक दो वर्ष पूर्ण होने पर आज किराड़ी जिला कांग्रेस द्वारा मंगलम फार्म में भव्य सम्मान समारोह का आयोजन किया गया। कार्यक्रम का आयोजन नव नियुक्त दिल्ली प्रदेश उपाध्यक्ष सुरेन्द्र कुमार के नेतृत्व में किया गया। इस अवसर पर किराड़ी जिला के समस्त पदाधिकारी, कार्यकर्ता एवं कांग्रेसजन बड़ी संख्या में उपस्थित रहे और भाई देवेंद्र यादव का सम्मान कर उन्हें शुभकामनाएं दीं। साथ ही सभी कार्यकर्ताओं ने वरुण ढाका को किराड़ी जिलाध्यक्ष बनाए जाने पर बधाई एवं शुभकामनाएं प्रेषित कीं। कार्यक्रम में मुख्य रूप से पूर्व विधायक एवं प्रदेश संगठन महासचिव अनिल भारद्वाज, रोहिणी जिलाध्यक्ष इंद्रजीत शौकीन, शंभु शर्मा, लोकसभा प्रभारी रघुरेंद्र पठानिया, महासचिव, विजय कुमार भारती, महिला जिलाध्यक्ष श्रीमती मीनू वर्मा, सेवादल जिलाध्यक्ष श्रीमती राजकुमारी सहित किराड़ी जिला के वरिष्ठ नेता, ब्लॉक अध्यक्ष, निगम पार्षद, निगम प्रत्याशी, विभिन्न विभागों के पदाधिकारी, युवा साथी एवं मातृ शक्ति उपस्थित रही। अपने संबोधन में वक्ताओं ने कहा कि देवेंद्र यादव के नेतृत्व में संगठन को नई मजबूती मिली है और कार्यकर्ताओं में उत्साह का संचार हुआ है। सभी ने संगठन को और मजबूत बनाने का संकल्प लिया। कार्यक्रम के अंत में दिल्ली प्रदेश उपाध्यक्ष सुरेन्द्र कुमार ने उपस्थित सभी अतिथियों एवं कार्यकर्ताओं का हार्दिक आभार व्यक्त किया।

नागपुर में भड़के नितिन गडकरी- ई20 पेट्रोल पर सवाल सुनते ही खोया आपा, पुलिस बुलाने की दे डाली धमकी!

नागपुर । नागपुर में आयोजित जलसंवाद 2026 जल संरक्षण सेमिनार में उस समय हड़कंप मच गया, जब केंद्रीय मंत्री नितिन गडकरी एक सवाल पर बुरी तरह भड़क उठे। जल प्रबंधन और किसानों के मुद्दों पर सभा को संबोधित करते हुए गडकरी का एक बेहद आक्रामक अंदाज देखने को मिला, जिसकी अब चारों ओर चर्चा हो रही है। घटना 17 मई 2026 की है, जब संबोधन के दौरान किसी ने उनसे सरकार की ई20 इथेनॉल-मिश्रित पेट्रोल नीति पर सवाल पूछ लिया। सवाल सुनते ही गडकरी अपना आपा खो बैठे और उन्होंने सख्त लहजे में सवाल पूछने वाले को पुलिस बुलाने की धमकी दे डाली। इस पूरी घटना का वीडियो अब सोशल मीडिया पर तेजी से वायरल हो रहा है। सोशल मीडिया पर वायरल हो रहे इस वीडियो को लेकर लोगों में काफी नाराजगी देखी जा रही है। कई यूजर्स एक सार्वजनिक कार्यक्रम में मंत्री द्वारा इस्तेमाल की गई रफ भाषा और उनके आक्रामक रवैये की कड़ी आलोचना कर रहे हैं। आलोचकों का कहना है कि एक जिम्मेदार पद पर बैठे व्यक्ति को जनता के सवालों का जवाब शालीनता से देना चाहिए। दरअसल, केंद्र सरकार की ई20 (20फीसदी इथेनॉल मिश्रित पेट्रोल) नीति को लेकर वाहन मालिकों के बीच पहले से ही काफी विरोध है। उपभोक्ताओं की मुख्य शिकायत यह है कि इस नए ईंधन के इस्तेमाल से गाड़ियों के इंजन खराब हो रहे हैं और माइलेज में भी भारी कमी आ रही है।

वोटिंग से 48 घंटे पहले झुका पुष्पा, फलता उपचुनाव की रेस से बाहर हुए टीएमसी उम्मीदवार जहांगीर खान

कोलकाता। बंगाल की फलता विधानसभा सीट पर होने वाले उपचुनाव से ठीक दो दिन पहले सूबे की राजनीति में एक बेहद चौंकाने वाला मोड़ आ गया है। पुष्पा के नाम से मशहूर और खुद को इस जंग में अकेला पा चुके तृणमूल कांग्रेस के प्रत्याशी जहांगीर खान ने अचानक चुनावी मैदान छोड़ दिया है। मंगलवार को चुनाव प्रचार के आखिरी दिन जहांगीर ने एलान किया, मैं अब यह चुनाव नहीं लड़ रहा हूं। जहांगीर खान ने एक प्रेस कांफ्रेंस में कहा, मुख्यमंत्री शुभेंदु अधिकारी ने फलता के विकास के लिए स्पेशल पैकेज की घोषणा की है। मैं इस चुनाव से पीछे हट रहा हूं। हालांकि, उन्होंने यह साफ नहीं किया कि क्या यह फैसला अभिषेक बनर्जी या तृणमूल शीर्ष नेतृत्व के किसी निर्देश पर लिया गया है। बंगाल के सीएम शुभेंदु अधिकारी ने इस पर टिप्पणी करते हुए कहा है कि वह इसलिए भाग गया क्योंकि उसे कोई पोलिंग एजेंट नहीं मिलेगा।

क्या कहता है नियम?

चूंकि नामांकन वापस लेने की तारीख पहले ही बीत चुकी है, इसलिए ईवीएम पर जहांगीर खान का नाम और चुनाव चिह्न बरकरार रहेगा, लेकिन वे व्यक्तिगत रूप से रेस से बाहर हो चुके हैं। इस नाटकीय घटनाक्रम के बीच, फलता में मुख्यमंत्री शुभेंदु अधिकारी के रोड शो के दौरान भाजपा कार्यकर्ताओं ने भगवा गुलाल उड़ाकर जमकर जश्न मनाया।

बंगाल में सत्ता बदलते ही एक्शन में निगम- अभिषेक बनर्जी पर शिकंजा कसने की तैयारी, 21 संपत्तियों के खिलाफ नोटिस

कोलकाता। पश्चिम बंगाल में ऐतिहासिक सियासी उलटफेर के बाद अब तृणमूल कांग्रेस के शीर्ष नेतृत्व की मुश्किलें बढ़ती नजर आ रही हैं। कोलकाता नगर निगम (केएमसी) ने टीएमसी के राष्ट्रीय महासचिव और सांसद अभिषेक बनर्जी से जुड़ी कई संपत्तियों को लेकर नोटिस जारी किया है। निगम ने इन संपत्तियों के स्वीकृत बिल्डिंग प्लान और निर्माण से जुड़े अन्य जरूरी दस्तावेज तलब किए हैं। यह प्रशासनिक कार्रवाई राज्य में तृणमूल कांग्रेस के 2011 से चले आ रहे शासन को उखाड़ फेंकने और भाजपा की नई सरकार के सत्ता में आने के ठीक बाद हुई है। नगर निगम के बेहद उच्च पदस्थ सूत्रों के मुताबिक, यह नोटिस अभिषेक बनर्जी, उनके परिवार के सदस्यों और लीप्स एंड बाउंड्स कंपनी के मालिकाना हक या उससे जुड़ी करीब 17 से 21 संपत्तियों के संबंध में भेजे गए हैं। इस कार्रवाई का मुख्य उद्देश्य यह जांचना है कि इन स्थानों पर किया गया निर्माण कार्य नगर निगम की ओर से मंजूर किए गए नक्शे के अनुरूप है या नहीं। शहरी विकास मंत्री

अग्निमित्रा पॉल ने इस पर कड़ा रुख अपनाते हुए कहा कि अभिषेक बनर्जी कानून से ऊपर नहीं हैं। उन्होंने दावा किया कि अधिकारियों ने टीएमसी नेताओं से जुड़ी कथित अवैध संपत्तियों की पहचान कर ली है।

इन प्रमुख इलाकों में भेजे गए नोटिस

निगम सूत्रों के अनुसार, जिन संपत्तियों को जांच के दायरे में लिया गया है, उनमें अभिषेक बनर्जी का 188ए हरीश मुखर्जी रोड स्थित आवास शामिल है। इसके अलावा कालीघाट रोड पर मौजूद एक निकटवर्ती इमारत, प्रमिंद मित्रा सरनी, पद्दिापुकुर रोड और उस्ताद आमिर खान सरनी जैसे प्रमुख इलाकों में स्थित परिसरों को भी नोटिस थमाया गया है।

केएमसी एक्ट के तहत कार्रवाई

नगर निगम के अधिकारियों ने स्पष्ट किया कि ये नोटिस कोलकाता नगर निगम अधिनियम, 1980 की धारा 400(1) के तहत जारी किए गए हैं। यह कानूनी प्रावधान प्राधिकारियों को कथित अनधिकृत निर्माण के संबंध में स्पष्टीकरण मांगने और संपत्ति मालिकों को अपना पक्ष रखने का मौका देने का अधिकार देता है। नोटिस में लिफ्ट और एस्केलेटर जैसी सुविधाओं के विस्तार या संशोधन के लिए जरूरी मंजूरियों का ब्यौरा भी मांगा गया है।

सुप्रीम कोर्ट की बड़ी टिप्पणी के बावजूद नहीं मिली राहत, उमर खालिद की जमानत याचिका लोअर कोर्ट से खारिज

नई दिल्ली । दिल्ली की एक अदालत ने मंगलवार को उमर खालिद को 2020 के उत्तर पूर्वी दिल्ली दंगों की साजिश में शामिल होने के आरोप में दायर यूएपीए मामले में अंतरिम जमानत देने से इनकार कर दिया। कड़कड़डूमा अदालत के अतिरिक्त सत्र न्यायाधीश समीर बाजपेयी ने खालिद की उस याचिका को खारिज कर दिया जिसमें उसने अपने चाचा के निधन के बाद होने वाले चेहलम अनुष्ठान में शामिल होने और 2 जून को होने वाली अपनी मां की सर्जरी से पहले और बाद की चिकित्सा जांच के लिए 15 दिनों की अंतरिम जमानत मांगी थी। अदालत ने आज कहा कि सिर्फ इसलिए कि उमर खालिद और अन्य आरोपियों को पहले अंतरिम जमानत दी जा चुकी है और उन्होंने कभी भी शर्तों का उल्लंघन नहीं किया है, इसका मतलब यह नहीं है कि हर बार जब भी आरोपी जमानत मांगे, उसे जमानत दे दी जाए। न्यायाधीश ने टिप्पणी की कि अपने चाचा के चेहलम समारोह में शामिल होना इतना जरूरी नहीं है और अगर रिश्ता इतना करीबी और घनिष्ठ था, तो उन्हें मृत्यु के समय ही जमानत मांगनी चाहिए थी, न कि इतने लंबे समय बाद। मां की सर्जरी के संबंध में, अदालत ने कहा कि खालिद की

अन्य बहनें हैं जो मां की देखभाल कर सकती हैं और पिता भी उनकी देखभाल कर सकते हैं। दिल्ली पुलिस ने अंतरिम जमानत याचिका का विरोध करते हुए कहा कि मामले की संवेदनशीलता और व्यापक परिणामों को देखते हुए खालिद की रिहाई से सार्वजनिक व्यवस्था और प्रशासन पर प्रतिकूल प्रभाव पड़ सकता है। यह तर्क दिया गया कि अंतरिम जमानत याचिका पूरी तरह से निराधार, योग्यताहीन और प्रारंभिक चरण में ही खारिज किए जाने योग्य है

> **कड़कड़डूमा अदालत के अतिरिक्त सत्र न्यायाधीश समीर बाजपेयी ने खालिद की उस याचिका को खारिज कर दिया जिसमें उसने अपने चाचा के निधन के बाद होने वाले चेहलम अनुष्ठान में शामिल होने और 2 जून को होने वाली अपनी मां की सर्जरी से पहले और बाद की चिकित्सा जांच के लिए 15 दिनों की अंतरिम जमानत मांगी थी।**

क्योंकि खालिद को अंतरिम जमानत देने के लिए कोई असाधारण, अत्यावश्यक या बाध्यकारी परिस्थिति मौजूद नहीं है। खालिद के खिलाफ दर्ज एफआईआर संख्या 59/2020 में उआपिक्सरिक प्रशासन की धारा 13, 16, 17, 18, शस्त्र अधिनियम की धारा 25 और 27, सार्वजनिक संपत्ति को नुकसान पहुंचाने से रोकने वाले अधिनियम, 1984 की धारा 3 और 4 और भारतीय दंड संहिता, 1860 के तहत अन्य अपराधों सहित गंभीर आरोप शामिल हैं। एफआईआर संख्या 59/2020 में जिन अन्य लोगों के खिलाफ आरोप पत्र दाखिल किए गए हैं, उनमें आम आदमी पार्टी के पूर्व पार्षद ताहिर हुसैन, जामिया समन्वय समिति के सदस्य सफूरा जरगर, मीरान हैदर और शिफा-उर-रहमान, कार्यकर्ता खालिद सैफी, शादाब अहमद, तस्लीम अहमद, सलीम मलिक और अथर खान शामिल हैं।

संगीताचार्य पं. हीरालाल चतुर्वेदी का योगदान अविस्मरणीय, 49वीं पुण्यतिथि पर संगीत जगत ने दी भावभीनी श्रद्धांजलि

नई दिल्ली।(साहिल गौड़) भारतीय शास्त्रीय संगीत के प्रचार-प्रसार में महत्वपूर्ण भूमिका निभाने वाले सुप्रसिद्ध संगीताचार्य एवं चतुर्वेदी संगीत विद्यालय के संस्थापक स्वर्गीय पंडित हीरालाल चतुर्वेदी की 49वीं पुण्यतिथि पर संगीत, साहित्य और सांस्कृतिक जगत से जुड़े गणमान्य लोगों ने उन्हें श्रद्धांजलि अर्पित की। वक्ताओं ने कहा कि पं. चतुर्वेदी ने अपना संपूर्ण जीवन भारतीय संगीत, संस्कृति और संस्कारों के संरक्षण के लिए समर्पित कर दिया।

स्व. पं. हीरालाल चतुर्वेदी ने वर्ष 1914 में पुरानी दिल्ली के नई सड़क क्षेत्र में चतुर्वेदी संगीत विद्यालय की स्थापना की थी। उन्होंने हजारों विद्यार्थियों को शास्त्रीय संगीत

की शिक्षा देकर भारतीय संगीत परंपरा को नई पीढ़ी तक पहुंचाने का कार्य किया। लोग उन्हें स्नेहपूर्वक ÷गुरुजी÷ कहकर संबोधित करते थे।

पद्म भूषण से सम्मानित प्र सि द्ध शास्त्रीय गायक पं. साजन मिश्रा ने कहा कि ÷पं. हीरालाल चतुर्वेदी केवल संगीतज्ञ नहीं, बल्कि भारतीय संस्कृति के सच्चे साधक थे। उन्होंने संगीत को साधना, सेवा और संस्कार का माध्यम बनाया। उनके शिष्य आज देश-विदेश में भारतीय संगीत की गरिमा बढ़ा रहे हैं।÷

पूर्व सांसद जय प्रकाश अग्रवाल ने कहा कि गुरुजी ने संगीत शिक्षा को समाज के हर वर्ग तक पहुंचाने का प्रयास किया तथा अनेक विद्यार्थियों को निःस्वार्थ भाव से प्रशिक्षित किया।

गुरुजी के ज्येष्ठ पुत्र एवं प्रख्यात संगीतज्ञ पं. उमा शंकर चतुर्वेदी ने कहा कि उनके पिता संगीत को आत्मा की भाषा मानते थे और उनका अनुशासन व शिक्षाएं आज भी परिवार और शिष्यों का मार्गदर्शन कर रही हैं।

राष्ट्र टाइम्स के संपादक विजय शंकर चतुर्वेदी ने कहा कि ÷गुरुजी का जीवन संघर्ष, साधना और संस्कारों की मिसाल था। उन्होंने सदैव भारतीय संस्कृति और संगीत को आने वाली पीढ़ियों तक पहुंचाने की प्रेरणा दी।÷

प्रसिद्ध तबला वादक शरीफ भारती ने कहा कि पं. हीरालाल चतुर्वेदी जैसे व्यक्तित्व समाज के लिए प्रेरणा स्रोत होते हैं। उनकी साधना और समर्पण आने वाली पीढ़ियों को सदैव प्रेरित करता रहेगा।

संगीत प्रेमियों ने भावुक स्वर में कहा कि गुरुजी भले ही आज हमारे बीच नहीं हैं, लेकिन उनके सुर, संस्कार और शिक्षाएं सदैव जीवित रहेंगी।

बंदोबस्त की दरकार

2012 में दिल्ली में चलती बस में छह पुरुषों द्वारा बलात्कार किए जाने के कुछ दिनों बाद पीड़िता की चोटों के कारण मौत हो गई। 23 वर्षीय फिजियोथेरेपी की छात्रा को प्रेस द्वारा निर्भया -यानी निडर का उपनाम दिया गया था। सामूहिक बलात्कार और हत्या के छह में चार दोषियों को घटना के आठ साल बाद 20 मार्च 2020 को सुबह 5:30 बजे दिल्ली की तिहाड़ जेल में फांसी दी गई थी। दोषियों को सजा मिलने के बाद प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने ट्वीट करते हुए कहा, न्याय की जीत हुई है। एक ऐसा राष्ट्र बनाना होगा जहां महिलाओं के सशक्तिकरण पर ध्यान केंद्रित किया जाए। निर्भया कांड के बाद देश में महिलाओं की सुरक्षा को लेकर नये सिरे से बहस शुरू हुई। महिला सुरक्षा और बलात्कार विरोधी नए कानून बनाए गए। बावजूद इसके आधी आबादी अभी भी पूरी तरह सुरक्षित नहीं हो पायी है। निर्भया कांड के चौदह साल बाद राजधानी दिल्ली में एक बार फिर उस जैसी घटना घटी है। ऐसे में सवाल यह है कि महिलाएं कब अपने आप को पूरी तरह सुरक्षित महसूस करेंगी। सवाल यह भी है कि महिलाओं के प्रति अपराध रुकने का नाम क्यों नहीं ले रहे? क्या अपराधियों को कानून का भय नहीं है? क्या तंत्र महिला सुरक्षा के प्रति संवेदनशील नहीं है? क्या समाज महिलाओं के प्रति हो रहे अपराध के प्रति आंखें मूंदे बैठा है या उदासीन है? दिल्ली स्थित नांगलोई में एक प्राइवेट स्लीपर बस के भीतर ड्राइवर और कंडक्टर द्वारा एक महिला के साथ कथित रूप से गैंगरेप की घटना ने सभ्य समाज को अंदर तक हिला कर रख दिया है। इस घटना ने एक बार फिर से शासन-प्रशासन, पुलिसिंग और परिवहन नियमों के पालन में हुई भारी चूक का उजागर किया है। दुःख इस बात का है कि जिस बस को महिलाएं सार्वजनिक यातायात के लिये सुरक्षित मानकर चलती हैं, उसी में यह दुर्भाग्यपूर्ण घटना घटित हुई है। इस घटना ने एक बार फिर से उजागर किया है कि जिन लोगों को यात्रियों के सुरक्षित आवागमन की जिम्मेदारी दी गई है, वे ही कथित तौर पर दरिंदे बनकर सामने आए। इसमें कोई दो राय नहीं है कि भारत, यदि अपनी प्राचीन गौरवशाली स्थिति पर पहुंचना और विकसित देशों की श्रेणी में शामिल होना चाहता है तो उसे अपनी लड़कियों और महिलाओं को सुरक्षित वातावरण प्रदान करने का कार्य निश्चित रूप से करना होगा। इस विषय पर अनगिनत चर्चाएँ की जा चुकी हैं, लेकिन धरातल पर ठोस कार्रवाई कम हुई है। परिणामस्वरूप, महिलाओं के विरुद्ध अपराध बढ़ रहे हैं और उनकी सुरक्षा को लेकर गंभीर चिंताएं उभर रही हैं। निर्भया कांड के बाद महिला सुरक्षा को लेकर तमाम कवायद हुई थी। फास्ट ट्रैक कोर्ट स्थापना करने की घोषणा की गई थी। इसके अलावा महिला सुरक्षा से जुड़ी तमाम योजनाओं के क्रियान्वयन के लिये व्यापक प्रचार किया गया था। इसके बावजूद एक और निर्भया जैसी घटना बताती है कि अब तक जमीनी हकीकत में बहुत कुछ बदलाव नहीं आया है। हर बार की तरह तुरंत कार्रवाई का दावा करते हुए गिरफ्तारी को तत्काल कदम उठाने के रूप में दर्शाया जा रहा है। जबकि एक हकीकत है कि हमारी व्यवस्था की कमियां जस की तस बनी हुई हैं। सही मायनों में देश के हृदय में वर्ष 2012 के जख्म अभी भरे नहीं हैं। विडंबना देखिए कि निर्भया कांड के बाद सरकारों ने तमाम सुधारों के वायदे जनता के सामने किए थे। तब घोषणा की गई थी कि अपराधियों पर नजर रखने के लिये दिल्ली में सीसीटीवी कैमरों की निगरानी को व्यापक रूप दिया गया है। लेकिन परिणाम जस के तस रहे। दिल्ली जैसे महानगर में अब बड़ी संख्या में माता-पिता अपनी बेटियों के समर्थन में खुलकर सामने आते हैं। वे शिकायत दर्ज कराने और न्याय की लड़ाई लड़ने में बच्चियों का साथ देते हैं। यही कारण है कि राजधानी में कई मामलों में पीड़िताएं खुलकर आवाज उठा पा रही हैं। इसके विपरीत ग्रामीण क्षेत्रों और छोटे कस्बों में आज भी सामाजिक बदनामी के डर से कई घटनाओं को दबा दिया जाता है। परिवार अक्सर समझौते का दबाव बनाते हैं और पीड़िताओं को चुप रहने के लिए मजबूर किया जाता है। इससे अपराधियों के हौसले और बढ़ जाते हैं। समस्या के विभिन्न पहलुओं पर विचार करें तो केवल पुलिस व्यवस्था मजबूत होने से समस्या का पूर्ण समाधान संभव नहीं है। महिलाओं की सुरक्षा को सामाजिक जिम्मेदारी के रूप में देखने की आवश्यकता है। परिवार और समाज के सोच में बदलाव भी बेहद जरूरी है। जानकारों के मुताबिक, महिलाओं के प्रति बढ़ते अपराध को कम करने के लिए जरूरी है कि हर स्तर पर काम हो। सबसे जरूरी है कि हर जिले में स्पेशल टास्क फोर्स बननी चाहिए। महिलाएं अपनी शिकायतें बिना संकोच पुलिस के सामने समय से रख सकें। इसके बाद पुलिस का काम है कि उस शिकायत पर जल्द से जल्द सही तरीके से जांच कर महिलाओं को न्याय दिलाया जाए। अपराधी के खिलाफ सख्त एक्शन हो। कई बार महिलाएं शिकायत के लिए आगे नहीं आ पातीं। अगर महिलाओं को शिकायत पर न्याय जल्दी और दुरुस्त होगा तो अन्य महिलाएं भी निडर होंगी उनका विश्वास भी बढ़ेगा। इसके लिए अलग से टास्क फोर्स जरूरी है। वास्तव में भारत में अब तक राष्ट्रीय स्तर के किसी सार्वजनिक सुरक्षा सर्वेक्षण में निवेश नहीं किया गया है।

परिणामस्वरूप, पुलिस की गश्त नागरिकों की वास्तविक सुरक्षा चिंताओं की बजाय अपनी समझ के आधार पर होती है। इस अंतर को मिटाना आवश्यक है। बसों, रेलगाड़ियों और दूसरे परिवहन साधनों में सुरक्षा का नियमित रूप से सर्वेक्षण किया जाना चाहिए और चालकों, परिचालकों आदि को समय-समय पर जागरूक किया जाना चाहिए। वहीं रियल-टाइम जीपीएस ट्रैकिंग को निजी बसों में अनिवार्य रूप से लागू करना चाहिए। साथ ही निजी बस चालक व परिचालकों की पृष्ठभूमि की कड़ी जांच करनी चाहिए। महिला सुरक्षा को लेकर बिलबोर्ड और शिकायत निवारण मंचों के संपर्क विवरणों के साथ नियमित सार्वजनिक अभियान चलाए जाने चाहिए। आपातकालीन हेल्पलाइन नंबरों की संख्या भी बढ़ाई जानी चाहिए। संकटकालीन कॉलों की निगरानी और उन पर कार्रवाई से सुरक्षा में सुधार होगा। कार्यस्थलों पर सुरक्षा भी चिंता का विषय है। कार्यालयों, कारखानों और व्यावसायिक प्रतिष्ठानों में महिलाओं का यौन शोषण व्यापक है। कामकाजी महिलाओं के लिए छात्रावास, अल्पकालिक आवास और सुरक्षित रात्रिकालीन यात्रा की सुविधा से महिलाओं की कार्यबल में भागीदारी बढ़ेगी। महिलाओं की सुरक्षा को लेकर शिक्षा और जागरूकता भी अहम भूमिका निभाती है।

नीट परीक्षा में अत्यंत शर्मनाक बर्ताव !

नीट परीक्षा प्रश्नपत्रों के लीक होना केवल शर्मनाक खबर ही नहीं है बल्कि यह लाखों विद्यार्थियों के साथ मानसिक बलात्कार है। इससे केवल विद्यार्थी ही नहीं हिले, बल्कि उनके माता-पिता और परिवारजन भी हिल गए हैं। मुझे कठोर शब्दों का प्रयोग करते हुए यह लेख लिखना पड़ रहा है तो इसका कारण यह है कि मैं हिला हुआ हूं। मेरे मन में यह गंभीर सवाल है कि हम तकनीकी रूप से इतने सक्षम है कि बिना हस्तक्षेप के देश के हर हिस्से में निष्पक्ष चुनाव करा सकते हैं तो फिर ईमानदारी से कोई परीक्षा क्यों नहीं करा सकते? जो विद्यार्थी हमारे भविष्य है, उनके सपनों को चूर-चूर करने वाला, इस तरह का घृणित, अपमानजनक और असंवेदनशील व्यवहार हम कैसे कर सकते हैं? उनके सपनों को रौंदते हुए हम कैसे आगे जा सकते हैं। प्रश्नपत्र लीक होने की घटना ने न केवल उन 22 लाख 5 हजार से ज्यादा बच्चों को मानसिक दर्द दिया है जो परीक्षा में शामिल हुए थे, बल्कि भविष्य में परीक्षा की तैयारी कर रहे विद्यार्थियों को मानसिक आघात पहुंचाया है। उनके विश्वास को ठेस लगी है, उनके भीतर यह आशंका पैदा की है कि मेहनत हम करें मगर सफल कहीं वो न हो जाएं जिनके पास प्रश्नपत्र परीक्षा से पहले पहुंच जाए। विद्यार्थी पूरी लगन से मेहनत करते हैं, सुख-चैन को ताक पर रख कर सपना पालते हैं कि नीट पास करने के बाद उन्हें मेडिकल कॉलेज में दाखिला मिलेगा। अच्छे डॉक्टर बनेंगे और देश की सेवा करेंगे लेकिन देश के गुनहगारों ने उनके सपनों को तोड़ दिया है। यह अलग बात है कि फिर से परीक्षा देंगे लेकिन पहली बार का जो उत्साह होता है, जो मेहनत होती है, उसकी बात ही अलग है। जो गति टूट गई, उसका क्या? उनके माता-पिता, भाई-बहन और परिवार के दूसरे लोगों को जो मानसिक झटका लगा है, उसका क्या? प्रश्नपत्र लीक होने की इस ताजा वारदात की चूंकि व्यापक चर्चा हो गई इसलिए परीक्षा को रद्द कर दिया गया मगर प्रतियोगी परीक्षाओं में गड़बड़झाले का क्या यह कोई पहला मामला है? जी नहीं। इतिहास खंगालेंगे तो आपको दर्जनों उदाहरण मिल जाएंगे लेकिन यह

ढूंढने की कोशिश करेंगे कि पुराने मामलों में कितने मगरमच्छों को सजा मिली तो आप शायद एक उदाहरण भी नहीं ढूंढ पाएंगे। मध्य प्रदेश का व्यापम घोटाला याद है न आपको। कहने को सैकड़ों गिरफ्तारियां हुईं, कुछ लोगों को सजा भी मिली लेकिन इस घोटाले की जांच के दौरान कम से कम 48 ऐसे लोगों की मौत हो गई जो इस मामले से किसी न किसी रूप से जुड़े हुए थे। कई बड़े लोगों के नाम भी आए लेकिन यह कभी पता नहीं चल पाया कि असली साजिशकर्ता कौन था? क्या यह संभव है कि कोई सरकार चाहे और जानकारी सामने नहीं आए? ऐसा हो ही नहीं सकता। निश्चय ही कुछ तो अनदेखा किया गया होगा ताकि मगरमच्छ न फंसें। दरअसल मगरमच्छ कभी नहीं पकड़े जाते, जांच एजेंसियों के हाथ कुछ छोटी मछलियां ही लगती हैं। बड़ी मछलियां भी बगैर व्यवधान के तैरती रहती हैं और मगरमच्छों की तो खैर बल्ले-बल्ले रहती है और मैं आपको यह कोई नई बात नहीं बता रहा हूं। शिक्षा जगत पर मगरमच्छों की पकड़ की कहानियां इतनी व्यापक हैं कि जहां ढूंढ़, वहीं एक कहानी मिल जाएगी। अब नीट प्रश्नपत्र लीक होने के ताजा मामले को गहराई से परखने का काम सीबीआई को दे दिया गया है लेकिन कुछ बातें बड़े सामान्य नजरिये से भी समझ में आ रही हैं। प्रश्नपत्र लीक मामले में राजस्थान के सीकर जिले की खंडेला तहसील के समर्थपुरा गांव के जिस राकेश कुमार मंडावरिया का नाम सामने आ रहा है वह दसवीं की पढ़ाई के बाद गांव छोड़कर सीकर चला गया। पंद्रह साल से वहीं रह रहा है, करता क्या है? इस सवाल का जवाब कहानी में पेंच पैदा करता है। पिछले कुछ वर्षों से वह सीकर के पिपराली रोड स्थित एक कोचिंग इंस्टीट्यूट के सामने कंसल्टेंसी ऑफिस चला रहा है। जरा ध्यान दीजिए कि कोचिंग इंस्टीट्यूट में काम नहीं करता है, वह इंस्टीट्यूट के ठीक सामने कंसल्टेंसी ऑफिस चलाता है। किस बात की कंसल्टेंसी? जवाब नदारद है, उस पर आरोप हालांकि साबित नहीं हुआ है लेकिन कोई भी व्यक्ति सहजता से उसकी भूमिका का अंदाजा लगा सकता है, और यह भी साफ समझ में आ रहा है कि राकेश मंडावरिया यदि गुनहगार है तो वह अकेला नहीं होगा। वह केवल मोहरा है, पीछे से पूरा सिंडिकेट होगा। अन्यथा राजस्थान से लेकर हरियाणा, बिहार, महाराष्ट्र, जम्मू-कश्मीर, आंध्र प्रदेश और तेलंगाना तक प्रश्नपत्र कैसे पहुंच जाता? शिक्षाविद् खान सर का यह कहना पूरी तरह दुरुस्त है कि हम एक डायपर खरीदते हैं तो उसमें लीक नहीं होता और यहां इतना बड़ा सिस्टम लीक हो गया? नौ साल पहले नेशनल टेस्टिंग एजेंसी का गठन ही इसलिए हुआ था ताकि परीक्षा की पवित्रता को कायम किया जा सके। मगर एजेंसी के कार्यकाल में भी हालात कहां सुधरे? मेरी स्पष्ट राय है कि प्रश्नपत्र लीक होना कोई सामान्य आपराधिक वारदात नहीं है, शिक्षा माफिया का जो कार्टेल यह सब कर रहा है, वह समाज के लिए ड्रग्स माफिया से भी ज्यादा नुकसानदायक है। यदि कोई अपात्र व्यक्ति प्रतियोगी परीक्षा पास करके कभी डॉक्टर बन जाने के मुकाम तक पहुंच गया तो वह मरीजों की जिंदगी से कैसा खिलवाड़ करेगा, इसका केवल अंदाजा भर लगाया जा सकता है। प्रश्नपत्र लीक जैसी वारदात को सीधे तौर पर देशद्रोह की श्रेणी में रखना चाहिए। सजा इतनी कठोर होनी चाहिए कि उस सिंडिकेट का हिस्सा बनने से हर कोई घबराए। प्रश्नपत्र लीक करना भी एक तरह का आतंकवाद ही है।

सम्पादकीय...

घर में बनाएं नेचुरल कूलिंग

गर्मियों के मौसम में सेहत के साथ साथ त्वचा की देखभाल भी काफी जरूरी होती है / चिलचिलाती गर्मी , पसीना और धूल मिट्टी से त्वचा नीरस और बेजान हो जाती है और कुछ लोगों को जलन भी महसूस होने लगती है / ऐसे में लोग महंगे सैलूनों और नामी कम्पनियों के उत्पादों पर ज्यादा भरोसा करते हैं जोकि जेब पर भारी पड़ते हैं और कई बार कोई ज्यादा फायदा भी नहीं मिलता जिससे उल्टा निराशा ही हाथ लगती है / आप चाहें तो घर में रखी प्रकृतिक चीजों से ही काफी सस्ती और असरदार क्रीम तैयार कर सकते हैं / यह चेहरे की त्वचा को कूल करेगी और आपको ताजगी का अहसास भी दिलाएगी // नेचुरल कूलिंग क्रीम तैयार करने के लिए कांच की कटोरी में एक चम्मच ऐलोवेरा जेल , एक चम्मच गुलाब जल और एक चम्मच खीरे के रस को एक चम्मच की मदद से तब तक अच्छे से मिक्स करें जब तक कि यह एक हल्की और मुलायम क्रीम जैसा न दिखने लगे, जैसे ही इसका टेक्सचर क्रीमी हो जाए, समझ लीजिए आपकी होममेड कूलिंग क्रीम तैयार है. / इस क्रीम को फ्रिज में रख लें / / इस क्रीम को आप सीधे चेहरे और त्वचा के खुले हिस्से पर लगा सकते हैं और लगाने के कुछ देर बाद ताजे ठन्डे पानी से धो डालिये / गर्मियों के मौसम में यह बेहतरीन क्रीम है / इस क्रीम को आप रात और दिन दोनों समय लगा सकते हैं / रात या दिन में लगाने से पहले चेहरे को साफ पानी से जरूर धो लें ताकि चेहरे पर जमा धूल , मिट्टी और प्रदूषण को हटाया जा सके अन्यथा यह क्रीम ज्यादा प्रभावी नहीं होगी /चेहरे को साफ करने के बाद इस क्रीम को हल्के हाथों से आहिस्ता आहिस्ता लगाएं और इसे । कुछ समय के लिए छोड़ दें और जब आप महसूस करें तब आप चेहरा धो सकते हैं / इस क्रीम को आप सुबह और रात में दो बार इस्तेमाल कर सकते हैं / इसके नियमित उपयोग से चेहरे को ठंडक मिलेगी और चेहरे पर ताजगी का अहसास होगा / इस क्रीम को दो तीन दिन के अन्दर ही उपयोग कर लें क्योंकि इसमें कोई प्रिजर्वेटिव का इस्तेमाल नहीं होता है,/ 2 —कांच की कटोरी में 2 चम्मच एलो वेरा जेल , एक चम्मच कैस्टर ऑयल और 2 विटामिन ई कैप्सूल मिला लें / इन तीनो चीजों को अच्छे से मिला लें जब सफेद रंग की क्रीमी रंगत की क्रीम बन जाये / रात को सोते समय इस क्रीम को चेहरे पर आहिस्ता आहिस्ता से इस तरह लगाएं की क्रीम चेहरे पर पूरी तरह से अब्जॉर्ब हो जाये / इसे आप रोजाना लगा सकते हैं और कुछ ही दिनों में अन्तर नजर आना शुरू हो जायेगा / 3 ——कांच के कटोरे 3 चम्मच एलोवेरा जेल लेकर इसमें एक चम्मच खीरे का रस मिलाने के बाद एक छोटा चम्मच बादाम तेल डालकर अच्छी तरह ब्लेंड कर लें / इस मिश्रण में 2 बूंदे पुदीने का तेल डालें / कूलिंग इफेक्ट के लिए आप इसमें पुदीने का तेल डाल सकते हैं / इस मिश्रण से बनी क्रीम को फ्रिज में लगा लें / इस क्रीम को नहाने के बाद या धूप से आने के बाद चेहरे और शरीर पर लगाएं। 4 ——कांच के कटोरे में 1 कप एलोवेरा जेल , 3 /4 कप नारियल तेल , दो चम्मच शियाबटर , 1 चम्मच शहद और 10 बूंदे टी ट्री ऑयल मिलाकर इसे अच्छी तरह फेंट कर क्रीम बना लें।

मुख्यमंत्री बाल सेवा योजना ने प्रतापगढ़ में अनाथ और संकटग्रस्त बच्चों के भविष्य निर्माण को दिया मजबूत आधार

उत्तर प्रदेश सरकार द्वारा संचालित मुख्यमंत्री बाल सेवा योजना आज उन हजारों बच्चों के जीवन में आशा की एक नई और उज्ज्वल किरण बनकर उभरी है जिनके सिर से माता-पिता का साया असमय ही उठ गया था। किसी भी समाज की प्रगति का पैमाना इस बात से आंका जाता है कि वह अपने सबसे कमजोर और असहाय वर्ग के प्रति कितना संवेदनशील है। इसी संवेदनशीलता का परिचय देते हुए प्रदेश सरकार ने अनाथ और संकटग्रस्त बच्चों के भरण-पोषण, शिक्षा और उनके सर्वांगीण विकास के लिए इस महत्वाकांक्षी योजना की शुरुआत की है। यह योजना केवल एक आर्थिक अनुदान मात्र नहीं है, बल्कि यह उन मासूमों को समाज की मुख्यधारा में सम्मानजनक स्थान दिलाने का एक सशक्त माध्यम है। प्रदेश में यह योजना अत्यंत व्यापक स्वरूप में है जिसे दो मुख्य श्रेणियों में विभाजित किया गया है ताकि समाज के हर जरूरतमंद बच्चे तक सहायता पहुंच सके। पहली श्रेणी उन बच्चों के लिए है जिन्होंने कोविड-19 वैश्विक महामारी के दौरान अपने माता-पिता या अभिभावकों को खो दिया। ऐसे बच्चों की मानसिक और आर्थिक स्थिति को समझते हुए सरकार ने उन्हें प्रति माह चार हजार रुपये की सहायता राशि प्रदान करने का निर्णय लिया है। दूसरी श्रेणी 'मुख्यमंत्री बाल सेवा योजना - सामान्य' के रूप में है, जो उन बच्चों को समर्पित है जिनके माता-पिता की मृत्यु कोविड के अलावा अन्य कारणों से हुई है, या जिनके माता-पिता जेल में हैं, अथवा जिन्हें बाल श्रम और भिक्षावृत्ति जैसे अंधकारमय जीवन से मुक्त कराया गया है। इसी क्रम में प्रतापगढ़ जनपद की दो बहनों, नैना श्रीवास्तव और अर्पिता श्रीवास्तव की कहानी इस योजना की सार्थकता का एक जीवंत और प्रेरक उदाहरण है। आवास विकास कॉलोनी के मीरा भवन क्षेत्र में रहने वाली इन बहनों का जीवन वर्ष 2023 में तब पूरी तरह बदल गया जब उनके पिता का निधन हो गया। परिवार के एकमात्र कमाऊ सदस्य के चले जाने से घर की आर्थिक स्थिति अत्यंत दयनीय हो गई और बच्चों की शिक्षा पर संकट के बादल मंडराने लगे। ऐसे कठिन समय में जब रिश्तेदारों और समाज से अपेक्षित सहयोग नहीं मिल पा रहा था, तब प्रदेश सरकार की इस योजना ने एक अभिभावक की भूमिका निभाते हुए इन बालिकाओं का हाथ थामा। नैना और अर्पिता की माता ने जिला प्रशासन के सहयोग से इस योजना का लाभ प्राप्त करने के लिए आवेदन किया। औपचारिकताएं पूरी होने के बाद जब दोनों बहनों को प्रति माह ढाई हजार रुपये की आर्थिक सहायता मिलने लगी, तो परिवार के भीतर एक नया आत्मविश्वास आ गया। यह धनराशि न केवल उनकी स्कूल की फीस और किताबों का सहारा बनी, बल्कि इसने उन बालिकाओं को यह संदेश भी दिया कि वे समाज में अकेली नहीं हैं। आर्थिक तंगी के कारण पढ़ाई छूटने का जो भय उनके मन में था, वह सहायता प्राप्त होने से धीरे-धीरे आत्मविश्वास में बदल गया और दोनों बहनें अपनी शिक्षा के प्रति और अधिक समर्पित हो गईं। पूरे आत्मसम्मान के साथ परिवार को जो सहायता प्राप्त हुई उसका सकारात्मक प्रभाव नैना के शैक्षणिक परिणामों में स्पष्ट रूप से दिखाई दिया, जिन्होंने हाईस्कूल की परीक्षा में 76 प्रतिशत अंक प्राप्त कर अपनी प्रतिभा का परिचय दिया। सरकार से सही समय पर मिली सहायता ने विपरीत से विपरीत परिस्थितियों में भी परिवार को सम्बल दिया। छोटी बहन अर्पिता भी अपनी बड़ी बहन के पदचिन्हों पर चलते हुए कक्षा 9 उत्तीर्ण कर हाईस्कूल में प्रवेश ले चुकी है और अपने भविष्य को लेकर उत्साहित है। इन दोनों बहनों के बढ़ते कदम आज जनपद के अन्य बच्चों के लिए भी प्रेरणा का स्रोत बन रहे हैं। मुख्यमंत्री बाल सेवा योजना के तहत शिक्षा को सर्वोच्च प्राथमिकता दी गई है। प्रदेश सरकार द्वारा कक्षा 12 तक के पात्र बच्चों को मुफ्त शिक्षा उपलब्ध कराने के लिए उन्हें अटल आवासीय विद्यालयों या कस्तूरबा गांधी आवासीय विद्यालयों में प्रवेश दिलाने की व्यवस्था की गई है। इसके साथ ही, आधुनिक युग की आवश्यकताओं को देखते हुए कक्षा 9 या उससे ऊपर के छात्रों को टैबलेट और लैपटॉप भी प्रदान किए जा रहे हैं, ताकि वे डिजिटल शिक्षा के क्षेत्र में किसी से पीछे न रहें। यह दूरदर्शी सोच बच्चों को न केवल शिक्षित बना रही है, बल्कि उन्हें तकनीकी रूप से भी सक्षम बना रही है। योजना का एक और महत्वपूर्ण मानवीय पक्ष पात्र बालिकाओं के विवाह के लिए दी जाने वाली आर्थिक सहायता है। जब इन निराश्रित बालिकाओं की आयु विवाह के योग्य होती है, तब प्रदेश सरकार द्वारा उनके कन्यादान हेतु एक लाख एक हजार रुपये की एकमुश्त राशि प्रदान की जाती है। यह प्रावधान सुनिश्चित करता है कि आर्थिक अभाव किसी बेटी के जीवन की नई शुरुआत में बाधा न बने। जिला प्रशासन के माध्यम से क्रियान्वित की जा रही ये सुविधाएं ग्रामीण और शहरी क्षेत्रों के उन अंतिम छोर पर खड़े परिवारों तक पहुँच रही हैं, जिनके पास आय का कोई स्थायी स्रोत नहीं है। पात्रता की शर्तों को भी अत्यंत व्यवहारिक रखा गया है ताकि वास्तविक लाभार्थियों को लाभ मिल सके। सामान्य श्रेणी की योजना में 0 से 18 वर्ष तक के अनाथ बच्चों के साथ-साथ विशेष परिस्थितियों में 23 वर्ष तक के युवाओं को भी शामिल किया गया है, बशर्ते परिवार की वार्षिक आय तीन लाख रुपये से कम हो। इससे उन युवाओं को भी संबल मिला है जो अपनी उच्च शिक्षा पूरी करना चाहते हैं। जिला प्रशासन द्वारा समय-समय पर शिविरों और जागरूकता कार्यक्रमों के माध्यम से इस योजना का प्रचार-प्रसार किया जाता है ताकि कोई भी पात्र बच्चा जानकारी के अभाव में इस लाभ से वंचित न रह जाए। प्रदेश सरकार का यह संकल्प कि 'कोई भी बच्चा आर्थिक तंगी के कारण शिक्षा से वंचित नहीं रहेगा', आज धरातल पर उतरता दिखाई दे रहा है। नैना और अर्पिता जैसे हजारों बच्चे आज अपनी आंखों में डॉक्टर, इंजीनियर या प्रशासनिक अधिकारी बनने का सपना संजो पा रहे हैं, तो इसके पीछे सरकारी योजनाओं का मजबूत कवच है। यह योजना बच्चों को केवल वित्तीय सुरक्षा ही नहीं प्रदान करती, बल्कि उन्हें स्वावलंबन और आत्म-सम्मान के साथ जीने का अवसर भी देती है। जब राज्य एक अभिभावक बनकर बच्चों के साथ खड़ा होता है, तो समाज में सुरक्षा और विश्वास का वातावरण निर्मित होता है। समाज के सर्वांगीण विकास की राह इन बच्चों की खुशहाली से होकर ही गुजरती है।

मुख्यमंत्री बाल सेवा योजना सामान्य ने प्रतापगढ़ सहित पूरे प्रदेश के संकटग्रस्त परिवारों के जीवन में एक नया अध्याय लिखा है, जहाँ संघर्ष की जगह अब सफलता की कहानियाँ आकार ले रही हैं। यह पहल उन समस्त बाधाओं को दूर करने की दिशा में एक क्रांतिकारी कदम है जो एक अनाथ या बेसहारा बच्चे की प्रगति के मार्ग में दीवार बनकर खड़ी होती थीं। आज इन बच्चों का आत्मविश्वास और उनकी शैक्षणिक उपलब्धियां इस बात का प्रमाण हैं कि सरकार की नीतियां जब सेवाभाव और पारदर्शिता के साथ लागू होती हैं, तो वे वास्तव में मानवता की सेवा का सबसे बड़ा अनुष्ठान बन जाती हैं। नैना और अर्पिता की उपलब्धियां केवल व्यक्तिगत सफलता नहीं हैं, बल्कि यह उस व्यवस्था की जीत है जो हर बच्चे को समान अवसर देने के लिए प्रतिबद्ध है। आज यह दोनों बहनें अपने उज्ज्वल भविष्य की ओर जिस दृढ़ता के साथ कदम बढ़ा रही हैं, वह अन्य वंचित बच्चों के लिए एक मशाल की तरह है। सरकार द्वारा प्रदान किया गया यह सहयोग इन बच्चों के जीवन में संबल का वह आधार बना है, जो इन्हें आने वाले समय में समाज के जिम्मेदार और सशक्त नागरिक के रूप में स्थापित करेगा। यह विकासपरक सोच और बच्चों के प्रति यह अटूट प्रतिबद्धता आने वाली पीढ़ियों के लिए एक समृद्ध, शिक्षित और सुरक्षित उत्तर प्रदेश की नींव को निरंतर सुदृढ़ कर रही है।

कौन सा विपक्ष, किसका विपक्ष और कैसा विपक्ष?

स्वतंत्र भारत के इतिहास में कई बार विपक्ष की स्थिति कमजोर रही है। वह निष्प्रभावी रहा है और वैचारिक और सांगठनिक बिखराव का शिकार रहा है। लेकिन जब भी मौका आया तो उसने अपनी प्रभावी भूमिकाओं का निर्वहन किया। बल्कि स्वयं पंडित जवाहर लाल नेहरू का यह कथन भी आज के संदर्भ में मौजूं है कि अगर विपक्ष नहीं है तो हमें विपक्ष पैदा करना पड़ेगा। इसीलिए वे स्वयं छद्म नामों से भी लेख और संपादकीय लिखा करते थे। ताकि प्रतिपक्ष का शरीर भले अनुपस्थित हो लेकिन उसकी आत्मा तो जिंदा रहे। एक दौर तो ऐसा आया जब कुछ अखबार मालिकों और संपादकों ने तय किया कि अगर संसद में विपक्ष नहीं है तो पत्रकारिता को प्रतिपक्ष की भूमिका निभानी होगी और उन्होंने वह भूमिकाएं निभाईं। आज चिंता की बात यह है कि आपातकाल को छोड़कर सत्तापक्ष और भारतीय राज्य का ऐसा चरित्र कभी नहीं रहा। सत्तापक्ष न तो कभी इतना क्रूर और निर्लज्ज था और न ही राज्य नामक संस्था इतनी प्रतिबद्ध और पक्षपाती। यहां तक कि आपातकाल के बाद भी राज्य का चरित्र ऐसा था कि उस इंदिरा गांधी की चुनावी हार हो गई जिन्होंने सोचा था कि आपातकाल लगाए जाने के बाद जनता उनकी मुट्ठी में आ चुकी है। लोकतंत्र के समक्ष इतनी प्रतिकूल स्थितियां कभी नहीं थीं जितनी आज हैं। क्योंकि तब एक गणित था कि अगर विपक्ष अपने मतों को एकजुट कर ले जाए तो सत्तापक्ष यानी कांग्रेस पार्टी को हटाकर विपक्ष अपनी सरकार बना सकता है। आज वह गणित फेल हो चुका है। अब लोकतंत्र या तो बीजगणित से चल रहा है या कैलकुलस से या फिर कुछ अदृश्य शक्तियां हैं जो बाजार के अदृश्य हाथ की तरह भारत को चला रही हैं। तुलसीदास ने एक जगह कहा है कि ''उमा दारु जोषित की नाईं।सबहि नचावत राम गुसाईं।।'' यानी जिस प्रकार मदारी बंदर को नचाता है वैसे ही प्रभु सभी को नचाते रहते हैं। वह प्रभु कौन है यह कई बार शोध और अनुसंधान का विषय लगता है और कई बार कुछ महाशक्तियों के बयानों और अपने महाप्रभुओं के प्रकट और अप्रकट भावों से पता चल जाता है। इसलिए राजनीति के कई जानकार कहते हैं कि इस देश के सत्तापक्ष और प्रतिपक्ष दोनों को कोई और चला रहा है तो अतिश्योक्ति नहीं लगती। वह संचालन पूंजी के माध्यम से हो रहा है, राजनीतिक एजेंडे के माध्यम से हो रहा है या फिर खुफिया एजेंसियों के माध्यम से हो रहा है यह विवेचन का विषय है। एक बार इस स्तंभकार ने नर्मदा आंदोलन पर मोनोग्राफ लिखते समय लिख दिया था कि विडंबना है कि सरदार सरोवर बांध बनवाने के लिए वही विश्व बैंक आर्थिक सहायता दे रहा है और वही विश्व बैंक आंदोलनकारी एनजीओ को अनुदान भी देता है। यानी बांध समर्थन और विरोध दोनों में एक ही शक्ति का हाथ है। पश्चिम बंगाल में ममता बनर्जी की पार्टी तृणमूल कांग्रेस की हार और तमिलनाडु में एम के स्टालिन की पार्टी द्रमुक की हार और केरल में यूडीएफ की विजय के बाद अगर कहीं सर्वाधिक उहापोह और खींचतान की स्थिति है तो वह है इंडियन नेशनल डेवलपमेंटल इनक्लूसिव अलायंस यानी इंडिया में। हालांकि यह कहने और लिखने वाले भी हैं कि देखो किस तरह राहुल गांधी ने ममता की हार से प्रसन्न हो रहे कांग्रेसियों को समझाने की कोशिश की और ममता का समर्थन किया, सोनिया गांधी और राहुल गांधी दोनों ने उन्हें फोन किया और अखिलेश यादव तो मिलने तक गए। और ममता बनर्जी ने भी कहा कि अब तो वे आजाद पंछी हैं और उन्हें कोई पद नहीं चाहिए, वे तो इंडिया समूह को मजबूत करेंगी। उससे विपक्षी एकता मजबूत होती दिख रही है। लेकिन दूसरी और कांग्रेस पार्टी की ओर से टीवीके पार्टी के अभिनेता से राजनेता बने टी.विजय को सरकार बनाने के लिए समर्थन दिए जाने के बाद द्रमुक और समाजवादी नेता अखिलेश यादव की जो प्रतिक्रिया आई है उससे तो यही लगता है कि अब विपक्ष में दरार और गहरी हो गई है। कम से कम दक्षिण की एक पार्टी उससे छिटक गई लगती है। द्रमुक के प्रवक्ता ने तो कांग्रेस पर पीठ में छुरा भोंपने का आरोप लगाया है तो पार्टी की नेता कनिमोझी ने लोकसभा अध्यक्ष को लिखकर दे दिया है कि वे द्रमुक के लिए सदन में इंडिया समूह से अलग बैठने की व्यवस्था कर दें। अखिलेश ने तो एक्स पर कांग्रेस पर तंज कसते हुए लिख दिया है कि वे संकट में किसी मित्र का साथ नहीं छोड़ते। यह तात्कालिक टिप्पणियां हैं जिनकी अपने अपने ढंग से व्याख्याएं हो रही हैं। लेकिन समझदारी वाली व्याख्याओं के अलावा नासमझी भरी टिप्पणियां और अतीत के गड़े मुर्दे उखाड़ने वाले भाव भी कम नहीं प्रकट हो रहे हैं। यह व्याख्याएं और टिप्पणियां महज हालिया चुनाव और उसके गुणा गणित तक सीमित नहीं हैं बल्कि गैर भाजपावाद के निर्माण के लिए पूरे गैर-कांग्रेसवाद के इतिहास के औचित्य पर ही सवाल उठाए जाने तक फैल गई हैं। समस्या शासक दल और राज्य नामक संस्था के अहंकार की ही नहीं है, समस्या विपक्षी दलों के अपने अपने अहंकार और भ्रम की भी है। अगर राहुल गांधी यह कहते हुए घूम रहे हैं कि नोट करके जेब में रख लीजिए कि भाजपा से सिर्फ कांग्रेस ही लड़ सकती है तो कम्युनिस्ट साथियों का यह बयान भी कम गलतफहमी वाला नहीं है कि संघ की विचारधारा से असली लड़ाई तो वामपंथ ही लड़ रहा है। जबकि क्षेत्रीय दलों और समाजवादी विरासत का दावा करने वाले दलों का अब भी दावा है कि भाजपा और संघ की विचारधारा के विस्तार को तो उन्होंने ही रोक रखा है। यानी कृष्ण की तरह गोवर्धन पर्वत तो उन्हीं की उंगली पर सधता है। इस बीच में यह ग्रंथि पाले कांग्रेसी बौद्धिक भी बैठे हैं कि संघ और भाजपा को आगे बढ़ाने का काम तो समाजवादियों ने किया और कम से कम दो बार यानी 1967 और 1977 में जनसंघियों को सत्ता दिलाने में उन्हीं का योगदान रहा। इसीलिए डॉ राम मनोहर लोहिया और जयप्रकाश नारायण को कोसने और सीआईए और इजराइल का एजेंट बताने वालों की तादाद भी कम नहीं है। निश्चित तौर पर उन लोगों की कमियां हो सकती हैं या फिर इतिहास के तात्कालिक प्रवाह में उनकी कांग्रेस विरोधी भूमिकाएं हो सकती हैं लेकिन एक बात दावे के साथ कही जा सकती है कि आज उस वजन का कोई नहीं है जो प्रतिपक्ष को जोड़ सके और गैर भाजपावाद के विचार को विपक्ष को जोड़ने वाले सीमेंट के गारे की तरह तैयार कर सके। भारतीय विपक्ष के पुनर्जीवन और भारतीय लोकतंत्र के पुनर्जीवन का एक ही उपाय है कि हम सब अतीत की ग्रंथियों से बाहर निकलें और नए युग के अनुरूप उपस्थित चुनौतियों को पहचानें। अतीत का गैर-कांग्रेसवाद और आज का गैर-भाजपावाद महज रणनीतियां हैं, वे सकारात्मक विचार नहीं हैं। असली चुनौतियां आज के दौर के लोकतांत्रिक ताने बाने और राष्ट्रीय अखंडता के बिखराव को रोकने की हैं। विपक्षी दल इस बात को समझ नहीं रहे हैं या अगर समझ रहे हैं तो वैसा व्यवहार नहीं कर रहे हैं कि अगर मतदान से सत्ता परिवर्तन की स्थितियां रहेंगी तभी उन्हें सत्ता मिलेगी। अगर खेल का वह नियम ही समाप्त हो जाएगा और हर चुनाव में विपक्षी दलों का मुकाबला, पहले मीडिया, फिर ईडी-सीबीआई, फिर चुनाव आयोग फिर भारतीय सुरक्षा बल और आखिर में अथाह पूंजी और प्रचार से सम्पन्न भाजपा से होगा तो वे कभी चुनाव नहीं जीत सकते। एसआईआर और परिसीमन ने नई जनता और नए मतदाता चुनने का नियम बना दिया है। लोकतंत्र उस व्यवस्था का नाम है जहां पर मतदाता अपनी सरकार चुनते हैं। यहां उल्टा हुआ है। यहां सरकार ने अपने मतदाता चुने हैं और फिर उनसे मुहर लगवा कर अपनी विजय घोषित कर दी गई है। भारतीय समाज और राष्ट्र के समक्ष इस समय दो प्रमुख चुनौतियां हैं। पहली चुनौती है राष्ट्रीय एकता और अखंडता को बचाने की। दूसरी चुनौती है लोकतंत्र की व्यवस्था को कायम रखने और उसे समाज के भीतर तक ले जाने की। 1946 में जब मुस्लिम लीग ने 16 अगस्त को सीधी कार्रवाई का आह्वान किया था तो उनका साफ कहना था कि हम हिंदुओं के साथ नहीं रह सकते।

स्वामी, प्रकाशक, मुद्रक विजय कुमार शास्त्री ने वन्दना ऑफसेट प्रिंटर्स, ए-9, साउथ पोर्टफीक एक्स. दिल्ली-33, से मुद्रित कर कार्यालय, बी-2/370, सुल्तानपुरी, दिल्ली-86 से प्रकाशित किया सम्पादक : विजय कुमार शास्त्री, मो. : 09582093548 समाचार पत्र में प्रकाशित सामग्री से संपादक का सहमत होना आवश्यक नहीं विवादास्पद केवल दिल्ली कोर्ट में होंगे। (DELHIN/2010/00882)

भोजपुरी कवि चंचरीक के निधन पर दी गयी श्रद्धांजलि

हाटा,कुशीनगर। नगर की साहित्यिक संस्था संदेश के संस्थापक अध्यक्ष एवं भोजपुरी कवि त्रिलोकी त्रिपाठी चंचरीक के निधन पर साहित्यकारों ने श्रद्धांजलि अर्पित किया। स्थानीय ग्राम महुई के निवासी चंचरीक बेसिक विभाग में शिक्षक भी रह चुके हैं।उन्होंने भोजपुरी साहित्य साधना में पूरा जीवन अर्पित कर दिया।तीन दशक से हर माह काव्य गोष्ठी कराते रहें।उनके निधन पर साहित्यकारों ने बैठक कर श्रद्धांजलि अर्पित किया।जिसकी अध्यक्षता भोजपुरी कवि,गीतकार चंदेश्वर परवाना ने किया।इस दौरान ए हमीद आरजू,रामजी कुशवाहा, डासच्चिदानंद पाण्डेय, डाशैलेंद्र असीम,डामोहन पाण्डेय भ्रमर, डा संपूर्णानंद द्विवेदी,पंकज मणि,परमानंद मिश्र,प्रो जयप्रकाश नारायण द्विवेदी, अक्षय गिरी,मधुसूदन मिश्र,इंद्रजीत प्रसाद, पी के सोनी,चंद्रहास वर्मा,आदि उपस्थित रहे। उनके निधन पर भोजपुरी कवि आर के भट्ट,डा ओमप्रकाश द्विवेदी ओम,सीमा गुप्ता,गीतकार अश्विनी द्विवेदी,दिनेश भोजपुरिया ,पत्रकार डी के पाण्डेय,कृष्णा श्रीवास्तव,नागरी प्रचारिणी सभा देवरिया के उपाध्यक्ष इंद्र कुमार दीक्षित,आदि ने शोक प्रकट किया है।इसी क्रम में श्रीनाथ संस्कृत महाविद्यालय में भी शोक व्यक्त करते हुए श्रद्धांजलि अर्पित की गयी।प्राचार्य डा राजेश कुमार चतुर्वेदी,डा संदीप कुमार पाण्डेय,डा रामऋषि द्विवेदी,डा बशिष्ठ द्विवेदी,डा रामानुज द्विवेदी,डा अमन तिवारी ,अवधेश सिंह आदि उपस्थित रहे।संस्था के मंत्री गंगेश्वर पाण्डेय ने त्रिपाठी के निधन पर कहा कि भोजपुरी के विकास में उनके योगदान को भुलाया नहीं जा सकेगा।प्रदेश सरकार के पूर्व मंत्री राधेश्याम सिंह ने भी शोक व्यक्त किया।

भाजपा का प्रशिक्षण वर्ग कार्यकर्ताओं को वैचारिक रूप से करेगा मजबूत - कामेश्वर सिंह

कुशीनगर।

पंडित दीनदयाल उपाध्याय प्रशिक्षण महाअभियान 2026 के अंतर्गत आगामी 21 व 22 मई को पडरौना के होटल स्काई लार्क में आयोजित होने वाले भारतीय जनता पार्टी के दो दिवसीय आवासीय जिला प्रशिक्षण वर्ग की तैयारियों को लेकर मंगलवार को जिला पंचायत अध्यक्ष सावित्री जायसवाल के आवास पर महत्वपूर्ण बैठक आयोजित की गई। बैठक में प्रशिक्षण वर्ग की रूपरेखा, व्यवस्थाओं एवं कार्यक्रमों की कार्ययोजना पर विस्तार से चर्चा की गई। बैठक को संबोधित करते हुए भाजपा किसान मोर्चा के प्रदेश अध्यक्ष एवं वर्ग प्रभारी कामेश्वर सिंह ने कहा कि भाजपा केवल चुनाव लड़ने वाली पार्टी नहीं, बल्कि एक वैचारिक आंदोलन है। पार्टी का उद्देश्य कार्यकर्ताओं को वैचारिक रूप से मजबूत बनाना है, ताकि वे सरकार

की योजनाओं और उपलब्धियों को प्रभावी ढंग से जनता तक पहुंचा सकें। उन्होंने बताया कि प्रशिक्षण वर्ग के दौरान 11 विशेष सत्रों में राष्ट्रीय एवं अंतरराष्ट्रीय मुद्दों, केंद्र व राज्य सरकार की नीतियों, संगठन विस्तार तथा जनसंपर्क जैसे विषयों पर कार्यकर्ताओं को प्रशिक्षित किया जाएगा। वर्ग में एक रात का प्रवास अनिवार्य रहेगा तथा प्रतिभागियों को 200 रुपये शुल्क डिजिटल माध्यम से जमा करना होगा। उन्होंने कहा कि कार्यकर्ताओं को प्रशिक्षण वर्ग में शामिल होने से पूर्व सरल एप पर ऑनलाइन पंजीकरण, शुल्क जमा एवं डिजिटल लर्निंग प्रोग्राम पूरा करना होगा। प्रशिक्षण के दौरान मोबाइल फोन बाहर रखने की व्यवस्था रहेगी, ताकि प्रतिभागी सत्रों पर पूरा ध्यान केंद्रित कर सकें। सभी प्रतिभागियों के लिए पूरे दो दिन और एक रात वर्ग स्थल पर रहना अनिवार्य होगा। वर्ग के अंत में ऑनलाइन परीक्षा एवं सरल एप पर रिपोर्टिंग भी करनी होगी।

21 व 22 मई को पडरौना में होगा भाजपा का दो दिवसीय आवासीय जिला प्रशिक्षण वर्ग

बैठक की अध्यक्षता पूर्व जिलाध्यक्ष नन्द किशोर मिश्र ने की तथा संचालन जिला उपाध्यक्ष प्रवीण गुंजन ने किया। इस अवसर पर पूर्व जिलाध्यक्ष जगदम्बा सिंह, जय प्रकाश शाही, डॉ. प्रेमचंद मिश्र, पडरौना विधायक मनीष जायसवाल, जिला पंचायत अध्यक्ष प्रतिनिधि प्रदीप जायसवाल, विवेकानंद शुक्ल, अतुल श्रीवास्तव, नन्द किशोर नाथानी, विश्वरंजन कुमार आनंद, मीनू जिंदल, डॉ. सीमा गुप्ता, सुदर्शन पाल, नमो नारायण मौर्य, बंका सिंह, मार्कण्डेय शाही, भीखम प्रसाद, धीरज पाठक, निशांत शुक्ल, दिवाकर मणि त्रिपाठी सहित अन्य लोग उपस्थित रहे।

इस्लाम एक व्यावहारिक जीवन पद्धति है - अनस नक्शबंदी

गोरखपुर।

मंगलवार को जामिया अल इस्लाह एकेडमी नौरंगाबाद गोरखनाथ में तीन दिवसीय स्पेशल समर क्लासेज के दूसरे दिन बच्चों को विचार व कर्म की शक्ति के बारे में बताया गया। बच्चों ने अपनी रचनात्मकता का परिचय देते हुए हज व बकरीद से संबंधित शानदार कार्ड भी बनाए। संयोजक कारी मुहम्मद अनस नक्शबंदी ने कहा कि इस्लाम में विचार और कर्म दोनों एक-दूसरे के पूरक हैं।

इस्लाम के अनुसार अच्छे विचार तब तक अधूरे हैं जब तक उन्हें कर्म में न बदला जाए, और बिना सही नियत के किया गया कोई भी कर्म व्यर्थ है। प्रसिद्ध हदीस है, कर्मों का दारोमदार नियत पर है। अगर आपका विचार और इरादा नेक है, तो अल्लाह उसका इनाम देता है, भले ही आप किसी कारणवश उस कर्म को पूरा न कर पाएं। कुरआन इंसानों को ब्रह्मांड, जीवन और खुद के अस्तित्व पर विचार और चिंतन करने का बार-

बार आदेश देता है। इस्लाम में अंधविश्वास की जगह समझदारी और सोच-विचार को बढ़ावा दिया गया है। इस्लाम में अल्लाह और उसके बंदों के प्रति हमेशा अच्छा और सकारात्मक विचार रखने की ताकीद की गई है। नकारात्मक सोच या बुरा गुमान करने को गुनाह माना गया है। इस्लाम केवल एक वैचारिक धर्म नहीं है, बल्कि यह पूरी तरह से एक व्यावहारिक जीवन पद्धति है। कुरआन में जहां भी ईमान का जिक्र आया है, उसके तुरंत बाद अमल-ए-सालेह (नेक कर्म) का जिक्र अनिवार्य रूप से मिलता है। बिना कर्म के केवल खोखले दावे इस्लाम में स्वीकार्य नहीं हैं। इस्लाम का बुनियादी सिद्धांत है कि कयामत के दिन हर इंसान को उसके कर्मों के आधार पर ही आंका जाएगा। विशिष्ट वक्ता तानिया अख्तर ने कहा कि इस्लाम सिखाता है कि केवल दुआ करने से काम नहीं चलेगा, बल्कि उसके लिए जमीन पर मेहनत भी करनी होगी। इसे तवक्कुल (अल्लाह पर भरोसा) कहा जाता है, जिसका मतलब है कि अपनी पूरी मेहनत करने के बाद परिणाम अल्लाह पर छोड़ देना। जब इंसान के नियत और कर्म में अंतर होता है, तो इस्लाम उसे पाखंड या निफाक कहता है। एक सच्चे मुसलमान का आंतरिक विचार और बाहरी कर्म हमेशा एक समान होने चाहिए। अच्छे विचार मिलकर नेक इरादे बनते हैं, और नेक इरादे ही बेहतरीन कर्मों को जन्म देते हैं। यही कर्म आगे चलकर इंसान का किरदार तय करते हैं। समर क्लासेज में आसिफ महमूद, आयशा खातून, शीरीन आसिफ, बेलाल अहमद, हाफिज आरिफ रजा, फरीदा खातून, अर्जुमंद बानो, अदीबा अंसारी, गुलफशा खातून, फरहीन, सना परवीन, फरहत, आयशा आबिद, यासमीन अख्तर, नाजिया खातून, साफिया, सैयदा यासमीन, हस्सान आसिफ सहित तमाम बच्चे मौजूद रहे।

-बच्चों ने बनाया हज व बकरीद पर शानदार कार्ड -जामिया अल इस्लाह एकेडमी में स्पेशल समर क्लासेज का दूसरा दिन

आकांक्षात्मक विकास खंड विशुनपुरा की समीक्षा बैठक में योजनाओं के प्रभावी क्रियान्वयन पर जोर

कुशीनगर। मुख्य विकास अधिकारी वंदिता श्रीवास्तव की अध्यक्षता में आकांक्षात्मक विकास खंड विशुनपुरा की समीक्षा बैठक आयोजित की गई। बैठक में शिक्षा, स्वास्थ्य, कृषि, बाल विकास एवं एनआरएलएम सहित विभिन्न विभागों की प्रगति की समीक्षा करते हुए योजनाओं के प्रभावी क्रियान्वयन और समयबद्ध लक्ष्य पूर्ति के निर्देश दिए गए। स्वास्थ्य विभाग की समीक्षा के दौरान 41 सीएचओ के सापेक्ष मात्र 12 की तैनाती पाए जाने पर नाराजगी जताई गई तथा रिक्त पद शीघ्र भरने के निर्देश दिए गए। वहीं आंगनबाड़ी केंद्रों में बच्चों के कम नामांकन और अव्यवस्थाओं पर असंतोष व्यक्त करते हुए सीडीपीओ को कार्यप्रणाली सुधारने के निर्देश दिए गए। बैठक में आंगनबाड़ी केंद्रों की आधारभूत सुविधाओं, विद्यालयों में शिक्षकों की उपलब्धता, प्रधानमंत्री किसान सम्मान निधि, स्वयं सहायता समूह, टीकाकरण अभियान एवं अन्य विकास योजनाओं की भी समीक्षा की गई। सीडीओ ने अधिकारियों को योजनाओं का लाभ पात्र लोगों तक पारदर्शी एवं समयबद्ध ढंग से पहुंचाने के निर्देश दिए। इस अवसर पर जिला विकास अधिकारी अरुण कुमार पांडेय, उप कृषि निदेशक अतिंद्र सिंह, जिला पंचायत राज अधिकारी आलोक प्रियदर्शी सहित जनपद एवं विकास खंड स्तरीय अधिकारी उपस्थित रहे।

विशेष जांच अभियान में पुलिस सख्त, कई वाहनों के चालान

कुशीनगर। जनपद में कानून व्यवस्था को सुदृढ़ बनाए रखने एवं सड़क दुर्घटनाओं पर नियंत्रण के उद्देश्य से पुलिस अधीक्षक कुशीनगर केशव कुमार के निर्देशन में चलाए जा रहे तीन दिवसीय विशेष जांच अभियान के तहत थाना रविंद्र नगर धूस क्षेत्र में मंगलवार को सघन वाहन जांच अभियान चलाया गया। जिला मुख्यालय एवं सरस्वती चौक पर चलाए गए इस अभियान के दौरान पुलिस ने वाहनों की गहन जांच की। यातायात नियमों का उल्लंघन करने वाले कई वाहनों के चालान किए गए, जबकि कुछ वाहन चालकों को चेतावनी देकर छोड़ दिया गया। पुलिस अधिकारियों ने लोगों से यातायात नियमों का पालन करने और सुरक्षित वाहन चलाने की अपील की। अभियान में प्रभारी निरीक्षक रविंद्र नगर धूस सूर्यभान यादव, एसआई शशांक राय, एसआई शुभम,एसआई महेंद्र यादव, एसआई भरत विशाल, कांस्टेबल रवि, हेमंत यादव, दिलीप, मनीष कुमार गुप्ता सहित अन्य पुलिसकर्मी मौजूद रहे।

अंतर्राज्यीय टप्पेबाज गिरोह का पर्दाफाश, दो शातिर गिरफ्तार

कुशीनगर।

पुलिस अधीक्षक कुशीनगर केशव कुमार के निर्देशन में अपराधियों के खिलाफ चलाए जा रहे अभियान के तहत कसानगंज पुलिस, स्वाट और सर्विलांस टीम ने अंतर्राज्यीय टप्पेबाज गिरोह के दो शातिर सदस्यों को गिरफ्तार किया है। पुलिस ने उनके कब्जे से 15 हजार रुपये नकद, घटना में प्रयुक्त मोबाइल फोन तथा एक आई-20 कार बरामद की है। गिरफ्तार अभियुक्तों की पहचान बिहार के मोतिहारी निवासी रमेश साहनी और मोहन शाह के रूप में हुई है। पुलिस के अनुसार दोनों आरोपी विभिन्न राज्यों में घूम-घूमकर बैंक से पैसा निकालने वाले लोगों को निशाना बनाते थे। पूछताछ में खुलासा हुआ कि 6 अप्रैल 2026 को स्टेट बैंक ऑफ इंडिया की कसानगंज शाखा से एक लाख रुपये निकालकर लौट रही महिला को झांसा

देकर आरोपियों ने रुपये चोरी कर लिए थे। इस मामले में थाना कसानगंज में मुकदमा दर्ज किया गया था। पुलिस ने बताया कि गिरफ्तार आरोपी मोहन शाह के खिलाफ पहले से भी कई आपराधिक मुकदमे दर्ज हैं। गिरफ्तारी के बाद पुलिस ने आरोपियों के खिलाफ आवश्यक विधिक कार्रवाई शुरू कर दी है। कार्रवाई करने वाली टीम में थानाध्यक्ष दीपक कुमार सिंह, स्वाट टीम प्रभारी स्वतंत्र कुमार सिंह, सर्विलांस प्रभारी सत्री दुबे, चौकी प्रभारी बबलू सोनकर सहित पुलिस टीम के अन्य सदस्य शामिल रहे।

ढाई किलो गांजा के साथ दो तस्कर गिरफ्तार, बाइक बरामद

कुशीनगर। जनपद में अवैध मादक पदार्थों के खिलाफ चलाए जा रहे अभियान के तहत कोतवाली पडरौना पुलिस ने मंगलवार को दो आरोपितों को 2 किलो 50 ग्राम अवैध गांजा एवं एक मोटरसाइकिल के साथ गिरफ्तार किया। पुलिस ने दोनों के खिलाफ एनडीपीएस एक्ट के तहत मुकदमा दर्ज कर कार्रवाई शुरू कर दी है। पुलिस के अनुसार संदिग्ध व्यक्ति एवं वाहन चेकिंग के दौरान आरोपितों को पकड़ा गया। गिरफ्तार अभियुक्तों में बिहार के पश्चिमी चंपारण निवासी प्रदीप मिश्रा तथा एक महिला शामिल है। पूछताछ में आरोपितों ने बताया कि वे गांजा तस्करी का काम करते हैं। महिला ट्रेन से ओडिशा जाकर गांजा लाती थी, जिसे बिहार में ऊंचे दामों पर बेचकर मुनाफा कमाया जाता था। कार्रवाई प्रभारी निरीक्षक ओमप्रकाश तिवारी के नेतृत्व में की गई। टीम में उपनिरीक्षक प्रदीप कुमार, राजाराम पाल सहित अन्य पुलिसकर्मी शामिल रहे।

टी20 विश्व कप से पहले स्मृति मंधाना का बड़ा दावा, टीम इंडिया अछी लय में, जीत का पूरा भरोसा

भारतीय महिला क्रिकेट टीम की उपकप्तान स्मृति मंधाना ने मंगलवार को कहा कि उनकी टीम अगले महीने होने वाले टी20 विश्व कप के लिए अछी स्थिति में है। महिला टी20 विश्व कप 12 जून से इंग्लैंड और वेल्स में खेला जाएगा। वनडे विश्व कप विजेता भारत 14 जून को टूर्नामेंट के अपने पहले मैच में चिर प्रतिद्वंद्वी पाकिस्तान से भिड़ेगा। मंधाना ने यहां एक कार्यक्रम के दौरान पत्रकारों से कहा, ''हमारा अभ्यास शिविर बहुत अछा रहा। मैं अभी इस बारे में इतना ही बताना चाहती हूं। मैं इस बारे में कोई विशिष्ट जानकारी नहीं देना चाहती हूं कि हमने किन चीजों पर काम किया है क्योंकि विश्व कप अब काफी करीब है।'' उन्होंने कहा, ''लेकिन मैं यह कहना चाहूंगी कि सभी खिलाड़ी अछी स्थिति में दिख रही हैं। उन्होंने बहुत अछी तरह से अभ्यास किया है और सभी कड़ी मेहनत कर रहे हैं।'' भारत की 15 सदस्यीय टीम ने बेंगलुरु के सेंटर ऑफ एक्सीलेंस (सीओई) में अभ्यास शिविर में हिस्सा लिया। वह विश्व कप से पहले मेजबान इंग्लैंड के खिलाफ तीन मैचों की टी20 अंतरराष्ट्रीय श्रृंखला के लिए 22 मई को रवाना होगी। मंधाना ने कहा, ''हम विश्व कप की तैयारी कर रहे हैं और उससे पहले हमें एक श्रृंखला में खेलना है। हमारी तैयारी अछी चल रही है और हम आगे भी कड़ी मेहनत करते रहेंगे। हमें पूरा विश्वास है कि हम विश्व कप जीतकर भारत को गौरवान्वित करेंगे।

सीएसके में एमएस धोनी के रोल पर कोच फ्लेमिंग का खुलासा, उन्होंने खेला नहीं, लेकिन प्रभाव बहुत बड़ा है

चेन्नई सुपर किंग्स (सीएसके) के मुख्य कोच स्टीफन फ्लेमिंग ने कहा कि एमएस धोनी ने भले ही अभी तक इंडियन प्रीमियर लीग (आईपीएल 2026) में नहीं खेला है, लेकिन अनुभवी विकेटकीपर-बल्लेबाज का टीम पर काफी प्रभाव बना हुआ है। उन्होंने आगे कहा कि टीम के लिए उनकी मौजूदगी बेहद महत्वपूर्ण रही है। ऋतुराज गायकवाड़ की अगुवाई वाली सीएसके ने सोमवार को चेपौक में सीजन का अपना आखिरी घरेलू मैच खेला और सनराइजर्स हैदराबाद (एसआरएच) से पांच विकेट से हार के बाद आईपीएल 2026 प्लेऑफ में क्वालीफाई करने की उनकी उम्मीदों को बड़ा झटका लगा। गौरतलब है कि धोनी, जो इस सीजन में सीएसके के किसी भी मैच में नहीं खेले हैं, से एसआरएच के खिलाफ मुकाबले में प्लेइंग इलेवन में वापसी की उम्मीद थी। हालांकि, पिंडली की चोट से उबर रहे 44 वर्षीय धोनी इस मैच में भी नहीं खेले। हालांकि धोनी अभी तक सीएसके के किसी भी मैच में नहीं खेले हैं, लेकिन कोच फ्लेमिंग ने कहा कि पूर्व कप्तान टीम से लगातार जुड़े रहे हैं और उनका टीम पर काफी प्रभाव है, खासकर युवा खिलाड़ियों के मार्गदर्शन और टीम में निरंतरता बनाए रखने में। मैच के बाद प्रेस कॉन्फ्रेंस में फ्लेमिंग ने कहा कि एमएस (धोनी) इस साल काफी समय से टीम के साथ हैं, जो टीम के लिए, कई युवा खिलाड़ियों के लिए और टीम में निरंतरता बनाए रखने के लिए बहुत महत्वपूर्ण रहा है। इसलिए, उनका टीम में बड़ा योगदान रहा है। भले ही उन्होंने मैच नहीं खेला है, लेकिन टीम पर उनका काफी प्रभाव रहा है। पॉइंट्स टेबल में फिलहाल छठे स्थान पर काबिज सीएसके को अपने बचे हुए मैच में जीत हासिल करनी होगी और इसके लिए पंजाब किंग्स, राजस्थान रॉयल्स और दिल्ली कैपिटल्स को अपने बचे हुए मैच हारने की जरूरत है। एसआरएच के खिलाफ पहले बल्लेबाजी करते हुए सीएसके ने संजू सैमसन की तेज शुरुआत और देवाल्ड ब्रेविस और शिवम दुबे के योगदान से 180/7 का स्कोर बनाया, लेकिन कप्तान पैट कमिंस की अगुवाई में एसआरएच के गेंदबाजों की लगातार विकेटों ने उन्हें मजबूत अंत करने से रोक दिया। जवाब में, एसआरएच ने बीच-बीच में विकेट गिरने के बावजूद साझेदारियों के जरिए मैच पर नियंत्रण बनाए रखा। ईशान किशन ने शानदार 70 रन बनाकर टॉप स्कोर किया, जबकि क्लासेन के तेज 47 रनों ने बीच के ओवरों में लय बनाए रखी। एसआरएच ने एक ओवर शेष रहते हुए आसानी से जीत हासिल कर ली। इस जीत के साथ ही एसआरएच और गुजरात टाइटन्स ने प्लेऑफ के लिए क्वालीफाई कर लिया है। रॉयल चैलेंजर्स बेंगलुरु के बाद नॉकआउट स्टेज में जगह बनाने वाली ये दोनों टीमें दूसरी और तीसरी हैं।

अश्विन का बड़ा बयान, धोनी के बाद बदलाव के दौर से गुजर रही सीएसके

पूर्व भारतीय क्रिकेटर रविचंद्रन अश्विन ने चेन्नई सुपर किंग्स (सीएसके) के कप्तान रुतुराज गायकवाड़ का समर्थन करते हुए कहा कि महेंद्र सिंह धोनी के कप्तानी छोड़ने के बाद आईपीएल की यह टीम स्पष्ट रूप से बदलाव के दौर से गुजर रही है। गायकवाड़ ने 2024 में सीएसके की कप्तानी संभाली थी और अश्विन ने कहा कि आईपीएल जैसे दबाव वाले टूर्नामेंट में किसी टीम का नेतृत्व करना आसान नहीं है। उन्होंने गायकवाड की कप्तानी को लेकर धैर्य बनाए रखने की भी अपील की। अश्विन ने जिओ हॉटस्टार से कहा, ''कप्तानी की अतिरिक्त जिम्मेदारी का असर रुतुराज गायकवाड़ की बल्लेबाजी पर पड़ा है। टी20 क्रिकेट पहले से ही चुनौतीपूर्ण होता है। ऐसे में सीएसके जैसी फ्रेंचाइजी की उम्मीदों का बोझ उठाना किसी भी खिलाड़ी पर काफी असर डाल सकता है।''सीएसके को मंगलवार को सनराइजर्स हैदराबाद से पांच

विकेट से करारी हार का सामना करना पड़ा, जिससे प्लेऑफ में पहुंचने की उसकी उम्मीदें लगभग खत्म हो गई हैं। अश्विन ने कहा, ''धोनी का युग समाप्त होने के बाद चेन्नई सुपर किंग्स स्पष्ट रूप से बदलाव के दौर से गुजर रही है। फ्रेंचाइजी से जुड़े सभी लोगों, प्रशंसकों, हितधारकों और टीम के लिए यह जानना जरूरी है कि नए सिरे से टीम को तैयार करने में समय लगता है।'' उन्होंने पांच बार की चैंपियन सीएसके की विरासत का हवाला देते हुए कहा, ''सीएसके की विरासत शानदार रही है जिसके कारण उससे काफी अपेक्षा की जाती है लेकिन वर्तमान टीम को आगे बढ़ने के लिए समय देना जरूरी है।'' ऑस्ट्रेलिया के पूर्व कप्तान आरोन फिंच ने रुतुराज की कप्तानी का आकलन करते समय संयम बरतने की अपील की और कहा कि कप्तानी की जिम्मेदारियों से स्वाभाविक रूप से किसी भी खिलाड़ी पर दबाव पड़ता है।

फिंच ने कहा, ''किसी भी खिलाड़ी या कप्तान का मूल्यांकन एक सत्र के आधार पर नहीं किया जाना चाहिए। टी20 क्रिकेट बेहद चुनौतीपूर्ण और अप्रत्याशित परिणाम देने वाला प्रारूप है। कप्तान के रूप में रुतुराज गायकवाड़ ने अछे फैसले किए हैं और उन्होंने धैर्य भी दिखाया है। उनके लिए सबसे महत्वपूर्ण अपनी बल्लेबाजी की लय को फिर से हासिल करना है।''इस बीच सनराइजर्स के गेंदबाजी कोच वरुण आरोन ने तेज गेंदबाज प्रफुल्ल हिंगे और साकिब हुसैन की जमकर तारीफ की। वरुण ने कहा, ''इसका बहुत सारा श्रेय प्रफुल्ल हिंगे और साकिब हुसैन को जाता है क्योंकि दोनों में ही सीखने की ललक है। उन्होंने भारत के लिए खेलने का पक्का इरादा कर लिया है। जब युवा खिलाड़ियों में इस तरह की महत्वाकांक्षा होती है तो उनका समर्पण और कड़ी मेहनत स्वाभाविक रूप से सामने आ जाती है।

जो अच्छा है उसको टीम में लाओ, वरना खत्म हो जाएगा, धोनी को लेकर दादा का यह किस्सा जीत लेगा दिल

मुंबई । आईपीएल 2026 का रोमांच फैंस के सिर चढ़कर बोल रहा है। इस सीजन कई युवा खिलाड़ियों ने अपने प्रदर्शन से सुर्खियां बटोरीं। अब उन्हें भारतीय टीम में शामिल करने को लेकर सोशल मीडिया पर चर्चा तेज हो गई है। इनमें वैभव सूर्यवंशी, प्रियांश आर्य जैसे युवा शामिल हैं। हालांकि, एक दौर था जब आईपीएल नहीं हुआ करता था और तब चयनकर्ता या कोच या फिर कप्तान खुद स्टेडियम जाकर भारत के घरेलू टूर्नामेंट के मैच देखा करते थे, ताकि सही खिलाड़ी को सही समय पर मौका दिया जा सके। भारत के पूर्व कप्तान सौरव गांगुली भी उन कप्तानों में शामिल थे, जो स्टेडियम जाकर खुद खिलाड़ी को परखते थे। इसी तरह उन्होंने महेंद्र सिंह धोनी को भी टीम में शामिल किया था। इसी की कहानी उन्होंने राज शमानी के पॉडकास्ट में कही है। उन्होंने बताया कि कैसे धोनी को उन्होंने टीम में लाने में कोई देरी नहीं की। पॉडकास्ट में जब गांगुली से पूछा गया कि धोनी को टीम मैनेजमेंट ने कैसे स्काउट किया? तो गांगुली ने बताया- मैं एमएस धोनी को देखने जमशेदपुर गया था और उन्हें पता भी नहीं है। सबा करीम ने मुझसे कहा कि वो बहुत छक्के मारता है तो उसको देख लो। तो उसे बस वहीं से हमने पिक किया और इंडिया-ए टीम में ले आए। इंडिया-ए के लिए पहला मैच उन्होंने वानखेड़े में खेला। तब वह मेरी टीम में थे। उस मैच में धोनी ने 100 रन बनाए। छक्के भी वो छत पर मार रहे थे। इसके बाद तो उनके टीम इंडिया में शामिल करना ही था। गांगुली ने आगे यह भी बताया कि क्यों टैलेंटेड खिलाड़ियों को पॉलिश का मौका नहीं देना चाहिए और जल्द से जल्द मौका देना चाहिए। उन्होंने कहा, जो अछा है उसको फास्ट-ट्रैक करना है। उसको छोड़ नहीं सकते। इस पर होस्ट ने पूछा कि उस खिलाड़ी के मैयोर होने का इंतजार भी नहीं करना चाहिए? जवाब में गांगुली ने कहा, खत्म हो जाएगा वो खिलाड़ी। अपने लेवल से ऊपर के लोगों के साथ खेलोगे तो आपका गेम बढ़ेगा। नीचे के लेवल के खिलाड़ियों के साथ खेलोगे तो लेवल नीचे जाएगा।

एमएस धोनी का युग समाप्त? शरीर कमजोर है बयान के साथ आईपीएल केरियर पर लग सकता है विराम

एमएस धोनी ने चेपॉक में औपचारिक रूप से संन्यास की घोषणा नहीं की, लेकिन आईपीएल 2026 के चेन्नई सुपर किंग्स के आखिरी घरेलू मैच के बाद उनके अपने शब्दों में संन्यास की घोषणा का ही सार था। पिंडली की चोट के कारण पूरा सीज़न मिस करने के बाद, धोनी सनराइजर्स हैदराबाद से पांच विकेट से मिली हार के बाद सीएसके टीम के साथ मैदान के चक्कर में शामिल हुए। उस रात पहले से ही लग रहा था कि सब कुछ खत्म हो गया है। सीएसके हार चुकी थी। प्लेऑफ में पहुंचने की उनकी उम्मीदें लगभग खत्म हो चुकी थीं। चेपॉक स्टेडियम में दर्शकों ने पूरे सीज़न धोनी को फिर से पीली जर्सी में देखने का इंतज़ार किया था, लेकिन उन्हें अपने आखिरी घरेलू मैच में खेलने के बजाय सिर्फ धन्यवाद देने के लिए मैदान के चक्कर में शामिल होते देखना पड़ा। तभी धोनी के लंबे समय के सीएसके साथी और फ्रेंचाइजी के सबसे भावुक आवाज़ों में से एक सुरेश रैना ने उनसे एक और सीज़न खेलने की उम्मीद जगाने की कोशिश की। मैच के बाद स्टार स्पोर्ट्स

पर बात करते हुए, रैना ने मैदान के चक्कर के दौरान धोनी के साथ हुई बातचीत का खुलासा किया। रैना ने धोनी से कहा कि आईपीएल 2026 को सही मायने में विदाई नहीं कहा जा सकता क्योंकि उन्होंने इसमें एक भी मैच नहीं खेला। रैना ने कहा कि मैंने उनसे कहा, 'आपने आईपीएल 2026 के लिए मिस्ड कॉल दी है। यह मान्य नहीं होगी।

आपको अगले साल वापसी करनी होगी। उन्होंने कहा, 'नहीं यार, शरीर थोड़ा वैसा है।' मैंने कहा, 'हम किसी बात पर विश्वास नहीं कर रहे हैं। आपको अगले साल खेलना ही होगा।' यह उनका निजी फैसला है। मुझे लगता है कि वह सकारात्मक हैं। टीम भी फिर से अछी तरह से एकजुट हो रही है। हालांकि, सीएसके के प्रशंसकों के दिलों में जो बात हमेशा बसी रहेगी, वह रैना की विनती नहीं, बल्कि धोनी का जवाब है। मेरा शरीर थोड़ा कमजोर है एक नाटकीय विदाई बयान नहीं था, जैसा कि आमतौर पर किसी करियर का अंत होता है। धोनी ने शायद ही कभी इस तरह से काम किया हो। लेकिन एक पूरे आईपीएल सीजन के बाद, जो उन्होंने बेंच पर बैठकर बिताया, यह इस बात की सबसे स्पष्ट स्वीकारोक्ति लग रही थी कि शायद अब उनका शरीर एक और वापसी की अनुमति नहीं देगा।